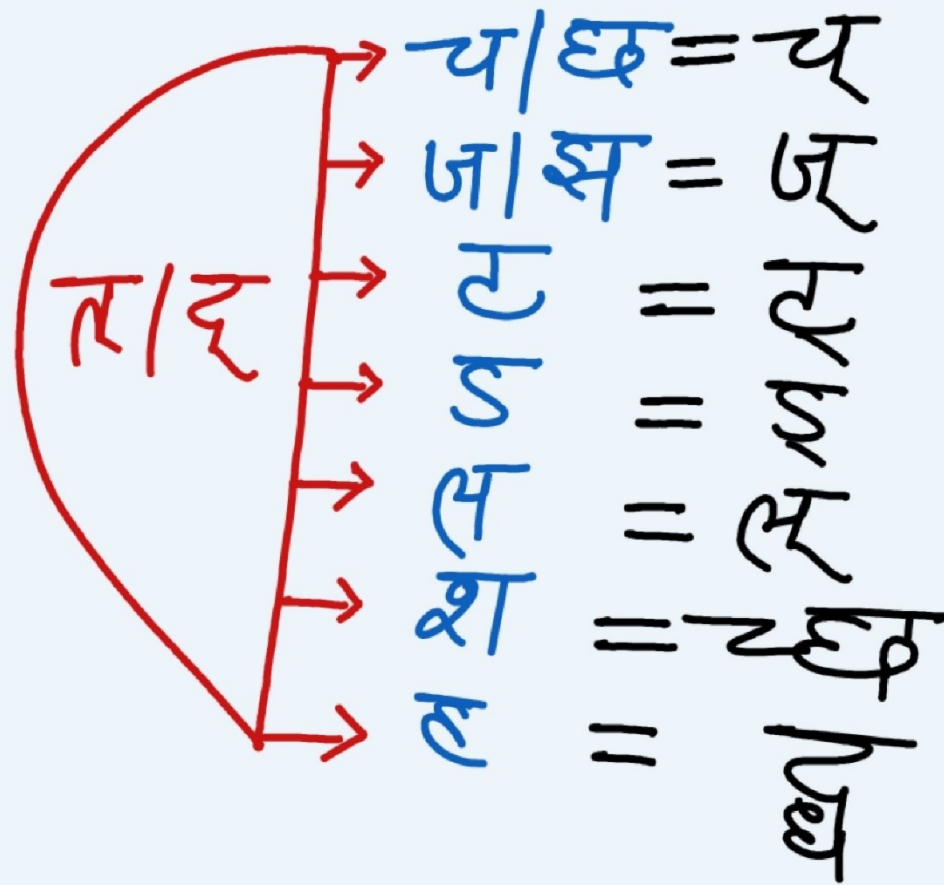


नियम-⑧ त्र/द् की संधि-



(i) [र/द् + च/छ]

यदि र/द् के बाद 'च/छ' वर्ण

आ जाए तो र/द् का 'च' हो जाता है-

जैसे- उर + चारुण = उच्चारुण, उर + चारण = उच्चारण
 च शरद् + चन्द्र = शरच्चन्द्र, उर + छिन्न
 च उर + छेद = उच्छेद च उच्छिन्न

(ii) [त्र।द् + ज।श्च]
ज

यदि त्र।द् के बाद 'ज।श्च' वर्ण आ जाए
तो 'त्र।द्' का 'ज्र' हो जाता है-

जैसे- सत्र + जन - सज्जन, विपत्र + ज्ञान - विपज्ज्ञान
ज्र उत्र + ज्वल - ज्र वृष्ट्र + झंकार -
ज्र उज्ज्वल, ज्र वृष्टज्झंकार

(iii) [र/इ + ट]

यदि 'र/इ' के बाद 'ट' वर्ण आ जाए तो 'र/इ' का 'ट' हो जाता है -

जैसे - र + लीका = रलीका / रलीका, इ + लीका = इलीका / इलीका
 इ + लंकार = इलंकार / इलंकार

(iv) [त्र/द् + ड]

यदि त्र/द् के बाद 'ड' वर्ण आ जाए तो 'त्र/द्' का 'इ' हो जाता है-

जैसे- $\text{उत्र} + \text{ड्यन} \rightarrow \text{उइड्यन} / \text{उड्यन}$, $\text{उत्र} + \text{डीन} \rightarrow \text{उइडीन} / \text{उडीन}$
 $\text{वृहत्र} + \text{डमरु} \rightarrow \text{वृहइडमरु} / \text{वृहडमरु}$

(v) (तृ/इ + ल)

यदि तृ/इ के बाद 'ल' वर्ण आ जाए तो 'तृ/इ' का 'ल' हो जाता है -

जैसे - उत्त + लंघन - उत्तलंघन, उत्त + लास - उत्तलास

विद्युत्त + लेखा - विद्युत्तलेखा

(vi) [त/द + श]
 च छ

यदि 'त/द' के बाद 'श' वर्ण आ जाए तो 'त/द' का 'च' और 'श' का 'छ' हो जाता है-

जैसे- उत्त + शासन - उत्तच्छासन, उत्त + शिष्ट - उत्तच्छिष्ट
 च छ च छ
 शरद + शशि - शरदच्छशि
 च छ च छ

श्रीमच्छरच्चन्द्र - श्रीमत् + शरत् + चन्द्र
 त्र श त्र य ष य

उत् + शुंखला - उच्छुंखला
 त्र ष

(vii) [तृ|द् + हृ]

↓ ↓

द् ध

यदि 'तृ|द्' के बाद 'हृ' वर्ण आ जाए तो 'तृ|द्' का 'द्' हो और 'हृ' इन्हीं (तृ|द्) के वर्ण का चौथा वर्ण अर्थात् 'ध' हो जाता है-

जैसे- उत्तृ + हृरण - उत्थरण, उत्तृ + हृार - उत्थार

↓ ↓ ↓ ↓

द् ध द् ध

पद्धति - पद (पद्) + दति, उद + दत् - उद्दत्

\downarrow
द्
 \downarrow
ध
 \downarrow
द्
 \downarrow
ध

मरुद + दारिणी - मरुद्धारिणी

\downarrow
द्
 \downarrow
ध

व्यंजन लोप / विशिष्ट संधि:-

युवन् + राज - युवराज, पक्षिन् + राज - पक्षिराज

पितृन् + हन्ता - पितृहन्ता, पतृ + भ्रंजति - पतृजमि

अब + ही = अभी, कभी - कब + ही, सभी - सब + ही,

तुम्हीं - तुम + ही, उन्हीं - उन + ही.